

ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका: शाहजहाँपुर जनपद का एक अध्ययन

प्रीती भारती एवं योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी

<https://doi.org/10.61410/had.v31i3.337>

सारांश

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology & ICT) ने समकालीन समाज में ज्ञान, शिक्षा, संचार एवं सामाजिक सहभागिता के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में ICT का विस्तार युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के लिए नए अवसरों का सृजन कर रहा है। प्रस्तुत शोध-लेख का उद्देश्य शाहजहाँपुर जनपद के ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका का अध्ययन करना है। अध्ययन के लिए शाहजहाँपुर जनपद के तीन चयनित ग्रामों—देउरिया, बल्लिया तथा हथौड़ा बुजुर्ग से कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। प्राथमिक आँकड़ों का संकलन संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि द्वारा किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश ग्रामीण युवा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूक हैं तथा शिक्षा, ज्ञानार्जन, संचार एवं सूचना प्राप्ति के लिए इंटरनेट एवं डिजिटल उपकरणों का नियमित उपयोग करते हैं। उत्तरदाताओं के एक बड़े वर्ग ने माना कि डिजिटल तकनीकों ने शिक्षा को अधिक सुलभ, प्रभावी एवं ज्ञानवर्धक बनाया है। साथ ही इंटरनेट के माध्यम से उनकी सामाजिक जागरूकता, सूचना तक पहुँच तथा संचार क्षमता में वृद्धि हुई है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, इंटरनेट कनेक्टिविटी तथा डिजिटल साक्षरता ICT के प्रभाव को निर्धारित करने वाले प्रमुख कारक हैं। यद्यपि ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल तकनीकों का सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, तथापि तकनीकी अवसंरचना की कमी, भाषा संबंधी बाधाएँ एवं डिजिटल असमानता जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरी है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना के सुदृढीकरण, डिजिटल साक्षरता के विस्तार तथा तकनीकी संसाधनों की सुलभता सुनिश्चित करने की आवश्यकता है, जिससे ग्रामीण युवाओं के समग्र विकास को और अधिक गति प्रदान की जा सके।

मुख्य शब्द : सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, ग्रामीण युवा, शैक्षिक सशक्तिकरण, सामाजिक सशक्तिकरण, डिजिटल साक्षरता, इंटरनेट, ग्रामीण विकास।

परिचय :

वर्तमान युग को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology- ICT) का युग कहा जाता है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान,

- शोध छात्रा समाजशास्त्र विभाग, डॉ० राम मनोहर लोहिया अर्थ विश्व विद्यालय, अयोध्या
- पूर्व आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, का० सु० साकेत पी० जी० कालेज, अयोध्या

शिक्षा, संचार, प्रशासन तथा सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इंटरनेट, स्मार्टफोन, कंप्यूटर, सोशल मीडिया तथा अन्य डिजिटल माध्यमों ने सूचना तक पहुँच को सरल, त्वरित एवं प्रभावी बना दिया है। इसके परिणामस्वरूप समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिले हैं। भारत एक ग्रामीण प्रधान देश है, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। ग्रामीण विकास की प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि युवा वर्ग सामाजिक परिवर्तन, नवाचार तथा विकास का प्रमुख वाहक होता है। वर्तमान समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण युवाओं को शिक्षा, रोजगार, कौशल विकास, सरकारी योजनाओं एवं वैश्विक सूचनाओं से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है। डिजिटल तकनीकों ने न केवल शिक्षा के अवसरों का विस्तार किया है, बल्कि युवाओं की सामाजिक सहभागिता, जागरूकता तथा निर्णय क्षमता को भी प्रभावित किया है। भारत सरकार द्वारा संचालित 'डिजिटल इंडिया', 'प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान' तथा अन्य डिजिटल पहलों ने ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी संसाधनों के विस्तार को गति प्रदान की है। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण युवाओं में इंटरनेट एवं डिजिटल उपकरणों के उपयोग की प्रवृत्ति में निरंतर वृद्धि हुई है। आज ग्रामीण युवा ऑनलाइन शिक्षा, ई-गवर्नेंस सेवाओं, डिजिटल बैंकिंग, रोजगार संबंधी सूचनाओं तथा सामाजिक नेटवर्किंग प्लेटफॉर्मों का उपयोग कर रहे हैं, जिससे उनके जीवन में अनेक सकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। हालाँकि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के अनेक लाभ हैं, फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल विभाजन, तकनीकी संसाधनों की सीमित उपलब्धता, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्याएँ, भाषा संबंधी बाधाएँ तथा डिजिटल साक्षरता का निम्न स्तर जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। ये चुनौतियाँ ग्रामीण युवाओं के लिए ICT के समुचित उपयोग में बाधक बन सकती हैं। अतः यह आवश्यक है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के वास्तविक प्रभाव का अध्ययन किया जाए तथा यह समझा जाए कि यह ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में किस प्रकार योगदान दे रही है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन शाहजहाँपुर जनपद के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं पर केंद्रित है। अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण युवाओं की शिक्षा, ज्ञानार्जन, सामाजिक सहभागिता एवं जागरूकता को किस सीमा तक प्रभावित कर रही है तथा उनके सशक्तिकरण में इसकी क्या भूमिका है। यह अध्ययन ग्रामीण विकास एवं डिजिटल समावेशन से संबंधित नीतियों के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

साहित्य समीक्षा

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) तथा ग्रामीण विकास के संबंध में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों ने शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, डिजिटल साक्षरता तथा ग्रामीण सशक्तिकरण में ICT की भूमिका को रेखांकित किया है।

उन्नीकृष्णन (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण क्षेत्रों में ज्ञान के प्रसार तथा शैक्षिक अवसरों के विस्तार का प्रभावी माध्यम है। अध्ययन के अनुसार डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता को बढ़ाती है।

सिंह एवं शर्मा (2016) ने ग्रामीण युवाओं में इंटरनेट उपयोग का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि इंटरनेट के बढ़ते उपयोग ने युवाओं की सामाजिक जागरूकता, सूचना तक पहुँच तथा

संचार कौशल को सुदृढ़ किया है। हालाँकि तकनीकी संसाधनों की असमान उपलब्धता एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है।

कुमार (2017) ने ग्रामीण शिक्षा पर डिजिटल तकनीकों के प्रभाव का विश्लेषण किया। अध्ययन में पाया गया कि ऑनलाइन शिक्षण सामग्री, ई-पुस्तकें तथा डिजिटल माध्यमों ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं छात्र-केंद्रित बनाया है।

मिश्रा एवं पाण्डेय (2018) के अध्ययन के अनुसार सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण युवाओं के व्यक्तित्व विकास एवं कौशल संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ICT के माध्यम से युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार संबंधी जानकारी प्राप्त होती है।

राजपूत (2019) ने डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के संदर्भ में ग्रामीण क्षेत्रों में ICT की स्थिति का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि सरकारी पहलों के परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट एवं डिजिटल सेवाओं का विस्तार हुआ है, जिससे युवाओं की डिजिटल भागीदारी में वृद्धि हुई है।

शर्मा (2020) ने ग्रामीण समाज में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि सोशल मीडिया ने युवाओं के सामाजिक संबंधों, विचारों के आदान-प्रदान तथा सामाजिक जागरूकता को प्रभावित किया है।

यादव एवं वर्मा (2021) ने ग्रामीण डिजिटल साक्षरता का अध्ययन करते हुए पाया कि डिजिटल साक्षरता का स्तर जितना अधिक होता है, ICT का उपयोग उतना ही प्रभावी होता है। अध्ययन में डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया गया।

कुमार एवं सिंह (2022) ने ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण में इंटरनेट की भूमिका का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि इंटरनेट के माध्यम से छात्रों को गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री तथा नवीनतम सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार होता है।

उपरोक्त अध्ययनों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अधिकांश अध्ययनों में ICT के सकारात्मक प्रभावों को रेखांकित किया गया है, किंतु स्थानीय स्तर पर विशेष रूप से शाहजहाँपुर जनपद के ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण पर इसके प्रभाव का विस्तृत अध्ययन अपेक्षाकृत कम देखने को मिलता है। यही शोध-रिक्ति (Research Gap) प्रस्तुत अध्ययन की आधारभूमि है। अतः यह अध्ययन शाहजहाँपुर जनपद के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रभाव का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

सैद्धांतिक आधार

किसी भी सामाजिक अनुसंधान की वैज्ञानिकता उसके सैद्धांतिक आधार पर निर्भर करती है। सिद्धांत न केवल अध्ययन की दिशा निर्धारित करते हैं, बल्कि शोध समस्या को समझने, तथ्यों की व्याख्या करने तथा निष्कर्षों को व्यापक सामाजिक संदर्भ में प्रस्तुत करने में भी सहायता प्रदान करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) की भूमिका को समझने के लिए आधुनिकीकरण सिद्धांत, सामाजिक परिवर्तन सिद्धांत,

नवाचार प्रसार सिद्धांत, डिजिटल विभाजन तथा सामाजिक सशक्तिकरण की अवधारणाओं को सैद्धांतिक आधार के रूप में अपनाया गया है।

1. आधुनिकीकरण सिद्धांत

आधुनिकीकरण सिद्धांत के प्रमुख प्रवर्तक डेनियल लर्नर (1958) माने जाते हैं। अपनी प्रसिद्ध कृति *The Passing of Traditional Society* में उन्होंने प्रतिपादित किया कि संचार माध्यम सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण के महत्वपूर्ण साधन हैं। उनके अनुसार जब व्यक्ति आधुनिक संचार साधनों के संपर्क में आता है, तो उसकी सोच, दृष्टिकोण एवं व्यवहार में परिवर्तन उत्पन्न होता है। वह परंपरागत सीमाओं से बाहर निकलकर व्यापक सामाजिक एवं आर्थिक अवसरों से जुड़ता है। ग्रामीण भारत के संदर्भ में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आधुनिकता के वाहक के रूप में कार्य कर रही है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, डिजिटल शिक्षा तथा सोशल मीडिया ने ग्रामीण युवाओं को राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर की सूचनाओं से जोड़ा है। इससे उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है तथा वे शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य एवं शासन संबंधी सूचनाओं तक अधिक सहजता से पहुँच बना पा रहे हैं। प्रस्तुत अध्ययन में यह सिद्धांत यह समझने में सहायता करता है कि ICT किस प्रकार ग्रामीण युवाओं को आधुनिक सामाजिक एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं से जोड़ रही है।

2. सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत

समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास ने भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को समझाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके अनुसार समाज स्थिर नहीं होता, बल्कि समय के साथ उसकी संरचना, मूल्य, मान्यताएँ एवं व्यवहार निरंतर परिवर्तित होते रहते हैं। सामाजिक परिवर्तन आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा तकनीकी कारकों के प्रभाव से उत्पन्न होता है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आज सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारक बन चुकी है। डिजिटल तकनीकों के माध्यम से ग्रामीण युवाओं के जीवन में शिक्षा प्राप्त करने के तरीके, संचार के स्वरूप, सामाजिक संबंधों तथा सूचना प्राप्ति की प्रक्रियाओं में परिवर्तन आया है। आज ग्रामीण युवा केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वैश्विक स्तर की जानकारी एवं अवसरों से भी जुड़ रहे हैं। इस दृष्टि से ICT सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

3. नवाचार प्रसार सिद्धांत

एवरेट रोजर्स (1962) द्वारा प्रतिपादित नवाचार प्रसार सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि कोई नई तकनीक, विचार अथवा नवाचार समाज में किस प्रकार फैलता है और लोग उसे कैसे अपनाते हैं। रोजर्स के अनुसार नवाचार को अपनाने वाले व्यक्तियों को पाँच श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—नवप्रवर्तक (Innovators), प्रारंभिक अपनाने वाले (Early Adopters), प्रारंभिक बहुसंख्यक (Early Majority), विलंबित बहुसंख्यक (Late Majority) तथा पिछड़े हुए समूह (Laggard)। ग्रामीण क्षेत्रों में ICT का प्रसार इसी प्रक्रिया का उदाहरण है। प्रारंभ में कुछ युवा ही इंटरनेट एवं स्मार्टफोन का उपयोग करते थे, किंतु धीरे-धीरे इसके लाभ स्पष्ट होने पर इसका उपयोग व्यापक रूप से बढ़ा। वर्तमान अध्ययन में यह सिद्धांत ग्रामीण युवाओं द्वारा डिजिटल तकनीकों को अपनाने की प्रवृत्ति तथा उनके उपयोग के स्तर को समझने में सहायक है।

4. डिजिटल विभाजन की अवधारणा

डिजिटल विभाजन से आशय उन असमानताओं से है जो विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच, उपयोग एवं कौशल के स्तर में पाई जाती हैं। यह विभाजन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों, पुरुष एवं महिला वर्गों, शिक्षित एवं अशिक्षित समूहों तथा आर्थिक रूप से सक्षम एवं कमजोर वर्गों के बीच देखा जा सकता है। यद्यपि भारत में डिजिटल क्रांति तेजी से आगे बढ़ रही है, फिर भी अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता तथा तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव देखा जाता है। डिजिटल विभाजन ICT के लाभों को सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचाने से रोकता है। प्रस्तुत अध्ययन में यह अवधारणा विशेष महत्व रखती है क्योंकि ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण पर ICT का प्रभाव उनकी डिजिटल पहुँच एवं उपयोग क्षमता पर निर्भर करता है।

5. सामाजिक सशक्तिकरण की अवधारणा

सामाजिक सशक्तिकरण का अर्थ व्यक्तियों एवं समूहों की सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षमताओं में वृद्धि से है, जिससे वे अपने जीवन से संबंधित निर्णयों में सक्रिय भागीदारी कर सकें। सशक्तिकरण व्यक्ति में आत्मविश्वास, जागरूकता, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक सहभागिता को बढ़ाता है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी सामाजिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी साधन बनकर उभरी है। ICT के माध्यम से ग्रामीण युवाओं को शिक्षा, कौशल विकास, सरकारी योजनाओं, रोजगार संबंधी सूचनाओं तथा सामाजिक नेटवर्किंग के अवसर प्राप्त होते हैं। इससे उनमें आत्मनिर्भरता, जागरूकता एवं सामाजिक भागीदारी की भावना विकसित होती है। इस प्रकार ICT ग्रामीण युवाओं को केवल तकनीकी रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से भी सशक्त बनाती है।

सैद्धांतिक आधार एवं अध्ययन की प्रासंगिकता

उपरोक्त सिद्धांतों एवं अवधारणाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण युवाओं के जीवन में बहुआयामी परिवर्तन ला रही है। आधुनिकीकरण सिद्धांत ICT को आधुनिकता के माध्यम के रूप में देखता है, सामाजिक परिवर्तन सिद्धांत इसे सामाजिक संरचना एवं व्यवहार में परिवर्तन का कारक मानता है, नवाचार प्रसार सिद्धांत तकनीकी स्वीकृति की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है, डिजिटल विभाजन की अवधारणा तकनीकी असमानताओं की ओर संकेत करती है तथा सामाजिक सशक्तिकरण की अवधारणा ICT के सकारात्मक सामाजिक प्रभावों को रेखांकित करती है। अतः प्रस्तुत अध्ययन इन सैद्धांतिक दृष्टिकोणों के आधार पर शाहजहाँपुर जनपद के ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका का विश्लेषण करता है।

अनुसंधान पद्धति

1. अनुसंधान की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) प्रकृति का है। अध्ययन का उद्देश्य शाहजहाँपुर जनपद के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका का विश्लेषण करना है।

2. अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जनपद के तीन चयनित ग्रामों—देवरिया, बल्लिया तथा हथौड़ा बुजुर्ग में किया गया। इन ग्रामों का चयन ग्रामीण परिवेश, तकनीकी पहुँच तथा सामाजिक-आर्थिक विविधता को ध्यान में रखते हुए किया गया।

3. अध्ययन की जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में चयनित ग्रामों के ग्रामीण युवा सम्मिलित किए गए। ये युवा अध्ययन के प्रमुख उत्तरदाता रहे, जिनसे सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग एवं प्रभाव से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई।

4. नमूना चयन

अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति (Purposive Sampling Method) का प्रयोग किया गया। प्रत्येक चयनित ग्राम से 100-100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। इस प्रकार कुल 300 उत्तरदाताओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

ग्राम का नाम	उत्तरदाताओं की संख्या
देवरिया	100
बलिया	100
हथौड़ा बुजुर्ग	100
कुल	300

5. आँकड़ों के स्रोत

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया।

(क) प्राथमिक स्रोत – प्राथमिक आँकड़े उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित कर संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से संकलित किए गए।

(ख) द्वितीयक स्रोत – द्वितीयक आँकड़े पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, सरकारी रिपोर्टों, जनगणना आँकड़ों, पत्र-पत्रिकाओं तथा इंटरनेट स्रोतों से प्राप्त किए गए।

6. आँकड़ा संकलन उपकरण (Tools of Data Collection)

अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया—

- संरचित प्रश्नावली (Structured Questionnaire)
- साक्षात्कार अनुसूची (Interview Schedule)
- अवलोकन पद्धति (Observation Method)

7. आँकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण (Classification and Analysis of Data)

संकलित आँकड़ों का वर्गीकरण, सारणीकरण एवं विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से किया गया। अध्ययन में मुख्यतः प्रतिशत विधि (Percentage Method) का उपयोग किया गया तथा निष्कर्षों को स्पष्ट एवं प्रभावी बनाने के लिए तालिकाओं एवं ग्राफों का प्रयोग किया गया।

8. अध्ययन की सीमाएँ (Limitations of the Study)

1. अध्ययन केवल शाहजहाँपुर जनपद के तीन चयनित ग्रामों तक सीमित है।
2. अध्ययन के निष्कर्ष उत्तरदाताओं द्वारा प्रदान की गई सूचनाओं पर आधारित हैं।
3. समय एवं संसाधनों की सीमाओं के कारण व्यापक क्षेत्र को अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया जा सका।
4. अध्ययन मुख्यतः सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के शैक्षिक एवं सामाजिक प्रभावों तक सीमित है।

परिणाम एवं चर्चा (Results and Discussion)

5.1 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति परिचय एवं लाभ

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 224 (74.67%) उत्तरदाता सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) से परिचित थे, जबकि 76 (25.33%) उत्तरदाता इससे परिचित नहीं थे। इसी प्रकार 206 (68.67%) उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें ICT से लाभ प्राप्त हुआ है, जबकि 94 (31.33%) उत्तरदाताओं ने कोई विशेष लाभ अनुभव नहीं किया। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण युवाओं के बीच ICT की पहुँच और उपयोगिता लगातार बढ़ रही है।

तालिका 1 : ICT से परिचय एवं लाभ

विवरण	हाँ	नहीं	प्रतिशत
ICT से परिचय	224	76	74.67
ICT से लाभ	206	94	68.67

5.2 घरों में इंटरनेट एवं कम्प्यूटर की उपलब्धता

अध्ययन में पाया गया कि 245 (81.67%) उत्तरदाताओं के घरों में कम्प्यूटर अथवा इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध थी, जबकि केवल 55 (18.33%) उत्तरदाताओं के घरों में यह सुविधा उपलब्ध नहीं थी। यह स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल पहुँच के विस्तार को दर्शाती है।

तालिका 2 : घरों में कम्प्यूटर/इंटरनेट सुविधा

सुविधा	संख्या	प्रतिशत
उपलब्ध	245	81.67
उपलब्ध नहीं	55	18.33
कुल	300	100

5.3 मोबाइल के माध्यम से इंटरनेट का उपयोग

कुल 230 (76.67%) उत्तरदाता इंटरनेट का उपयोग मोबाइल फोन के माध्यम से करते हैं, जबकि 70 (23.33%) उत्तरदाता मोबाइल आधारित इंटरनेट उपयोग नहीं करते। इससे स्पष्ट होता है कि स्मार्टफोन ग्रामीण युवाओं के लिए ICT का प्रमुख माध्यम बन चुका है।

तालिका 3 : मोबाइल द्वारा इंटरनेट उपयोग

प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
हां	230	76.67
नहीं	70	23.33
कुल	300	100

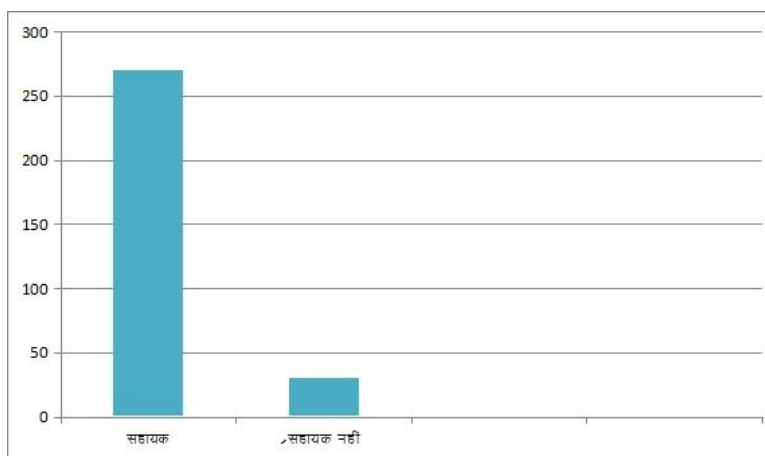
5.4 शिक्षा में डिजिटल उपकरणों की भूमिका

अध्ययन के अनुसार 264 (88%) उत्तरदाताओं का मत था कि डिजिटल उपकरण शिक्षा के क्षेत्र में सहायक हैं, जबकि केवल 36 (12%) उत्तरदाता इससे असहमत थे। यह परिणाम दर्शाता है कि ग्रामीण युवा डिजिटल तकनीकों को शिक्षा के महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार कर रहे हैं।

तालिका 4 : शिक्षा में डिजिटल उपकरणों की उपयोगिता

प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
सहायक	264	88.00
सहायक नहीं	36	12.00
कुल	300	100

शिक्षा में डिजिटल उपकरणों की उपयोगिता
उत्तरदाताओं की राय



5.5 ग्रामीण शिक्षा में इंटरनेट का महत्व

218 (72.67%) उत्तरदाताओं ने ग्रामीण शिक्षा में इंटरनेट को महत्वपूर्ण माना, जबकि 82 (27.33%) उत्तरदाता इससे सहमत नहीं थे। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि इंटरनेट ग्रामीण शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

तालिका 5 : ग्रामीण शिक्षा में इंटरनेट का महत्व

प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
हाँ	218	72.67
नहीं	82	27.33
कुल	300	100

5.6 ज्ञानवृद्धि पर इंटरनेट का प्रभाव

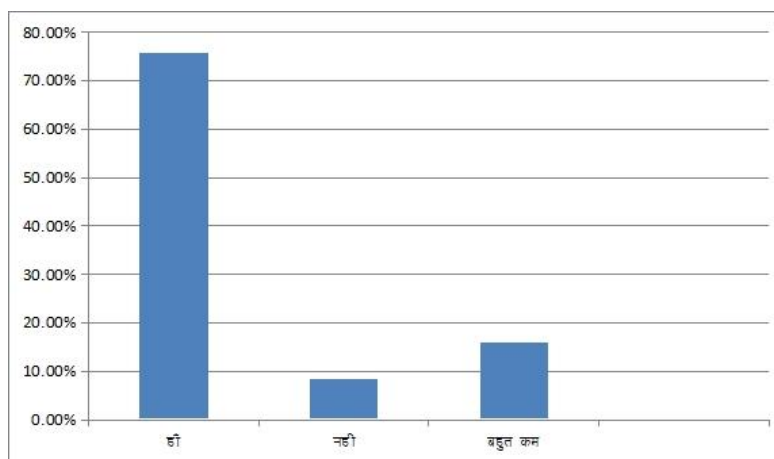
अध्ययन में 227 (75.67%) उत्तरदाताओं ने माना कि इंटरनेट उनके ज्ञान में वृद्धि करता है। केवल 25 (8.33%) उत्तरदाता इससे असहमत थे तथा 48 (16.00%) उत्तरदाताओं ने इसका प्रभाव सीमित माना। इससे स्पष्ट है कि इंटरनेट ग्रामीण युवाओं के ज्ञानार्जन का प्रमुख स्रोत बन चुका है।

तालिका 6 : इंटरनेट द्वारा ज्ञानवृद्धि

प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
हाँ	227	75.67
नहीं	25	8.33
बहुत कम	48	16.00
कुल	300	100

इंटरनेट द्वारा ज्ञानवृद्धि

ग्रामीण युवाओं की प्रतिक्रिया



5.7 इंटरनेट उपयोग में भाषा संबंधी समस्या

147 (49%) उत्तरदाताओं ने इंटरनेट उपयोग में भाषा संबंधी समस्या का अनुभव किया, जबकि 153 (51%) उत्तरदाताओं ने ऐसी किसी समस्या से इंकार किया। यह परिणाम इंगित करता है कि स्थानीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री की उपलब्धता अभी भी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

तालिका 7 : इंटरनेट उपयोग में भाषा संबंधी समस्या

प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
हाँ	147	49
नहीं	153	51
कुल	300	100

चर्चा (Discussion)

प्राप्त निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अधिकांश उत्तरदाता ICT से परिचित हैं तथा इसके लाभों का अनुभव कर रहे हैं। घरों में इंटरनेट की उपलब्धता, मोबाइल आधारित इंटरनेट उपयोग तथा शिक्षा में डिजिटल उपकरणों की स्वीकृति ICT के बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है। साथ ही इंटरनेट ज्ञानवृद्धि एवं शिक्षा के प्रसार का प्रभावी माध्यम बनकर उभरा है। हालांकि भाषा संबंधी बाधाएँ तथा कुछ क्षेत्रों में डिजिटल जागरूकता की कमी अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना, स्थानीय भाषा आधारित डिजिटल सामग्री तथा डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव (Conclusion and Suggestions)

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन "ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका: शाहजहाँपुर जनपद का एक अध्ययन" के अंतर्गत शाहजहाँपुर जनपद के चयनित ग्रामों के 300 ग्रामीण युवाओं से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) ग्रामीण युवाओं के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला रही है तथा उनके शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बनकर उभरी है।

अध्ययन में अधिकांश उत्तरदाता ICT से परिचित पाए गए तथा उन्होंने इसके सकारात्मक प्रभावों को स्वीकार किया। घरों में इंटरनेट एवं डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता ने युवाओं को ज्ञान, शिक्षा एवं सूचना के विविध स्रोतों तक पहुँच प्रदान की है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने माना कि डिजिटल उपकरण शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं सुगम बनाते हैं तथा इंटरनेट उनके ज्ञान एवं जागरूकता में वृद्धि करता है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि मोबाइल फोन ग्रामीण युवाओं के लिए इंटरनेट उपयोग का प्रमुख माध्यम है। डिजिटल तकनीकों ने युवाओं को नवीन सूचनाओं, शैक्षिक संसाधनों एवं सामाजिक

संवाद के अवसर उपलब्ध कराए हैं। इससे उनकी सामाजिक सहभागिता, निर्णय क्षमता तथा जागरूकता में सकारात्मक वृद्धि हुई है।

हालाँकि अध्ययन में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आईं, जिनमें भाषा संबंधी बाधाएँ, डिजिटल साक्षरता का असमान स्तर, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्याएँ तथा तकनीकी संसाधनों की सीमित उपलब्धता प्रमुख हैं। ये चुनौतियाँ ग्रामीण युवाओं द्वारा प्लैटफॉर्म के पूर्ण एवं प्रभावी उपयोग में बाधा उत्पन्न करती हैं।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण युवाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन है तथा ग्रामीण विकास की प्रक्रिया में इसकी भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। यदि डिजिटल अवसरचना एवं डिजिटल साक्षरता को और अधिक सुदृढ़ किया जाए तो ICT ग्रामीण युवाओं के समग्र विकास को नई दिशा प्रदान कर सकती है।

सुझाव (Suggestions)

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं—

- 1- ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाली इंटरनेट सेवाओं का विस्तार किया जाए, ताकि युवाओं को निर्बाध डिजिटल सुविधाएँ प्राप्त हो सकें।
- 2- डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का व्यापक संचालन किया जाए, जिससे ग्रामीण युवा डिजिटल उपकरणों एवं ऑनलाइन सेवाओं का प्रभावी उपयोग कर सकें।
- 3- विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में ICT आधारित शिक्षण व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए, ताकि विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीकी संसाधनों का लाभ मिल सके।
- 4- स्थानीय भाषाओं में डिजिटल शैक्षिक सामग्री विकसित की जाए, जिससे भाषा संबंधी बाधाओं को कम किया जा सके।
- 5- आर्थिक रूप से कमजोर ग्रामीण युवाओं को डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु विशेष योजनाएँ चलाई जाएँ, ताकि डिजिटल असमानता को कम किया जा सके।
- 6- ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक डिजिटल केंद्र (Community Digital Centers) स्थापित किए जाएँ, जहाँ युवा इंटरनेट, ई-लर्निंग एवं ई-गवर्नेंस सेवाओं का लाभ प्राप्त कर सकें।
- 7- डिजिटल सुरक्षा एवं साइबर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए, जिससे युवा सुरक्षित एवं जिम्मेदार डिजिटल नागरिक बन सकें।
- 8- सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं के सहयोग से ग्रामीण युवाओं के लिए कौशल विकास एवं ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएँ, जिससे रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों में वृद्धि हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1- अग्रवाल, वाई. पी. (2008). सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान पद्धति. नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स।
- 2- कोठारी, सी. आर. (2009). अनुसंधान पद्धति: विधियाँ एवं तकनीकें. नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।

- 3- सिंह, योगेश कुमार (2010). अनुसंधान पद्धति एवं सांख्यिकी. नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
 - 4- दुबे, श्यामाचरण (2014). भारतीय ग्राम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
 - 5- दुबे, श्यामाचरण (2007). भारतीय समाज. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
 - 6- श्रीनिवास, एम. एन. (2009). आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
 - 7- मुखर्जी, रामकृष्ण (2011). ग्रामीण समाजशास्त्र. नई दिल्ली: विवेक प्रकाशन।
 - 8- देसाई, ए. आर. (2010). भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।
 - 9- यादव, वीरेंद्र सिंह (2018). ग्रामीण समाजशास्त्र. आगरा: साहित्य भवन पब्लिकेशन्स।
 - 10- चौहान, सी. पी. एस. (2017). भारतीय समाज एवं संस्कृति. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
 - 11- सिंह, आर. बी. (2019). सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: अवध पब्लिकेशन्स।
 - 12- भारत सरकार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (2015). डिजिटल इंडिया कार्यक्रम. नई दिल्ली।
 - 13- नीति आयोग (2022). डिजिटल परिवर्तन एवं ग्रामीण विकास रिपोर्ट. नई दिल्ली।
 - 14- विश्व बैंक (2021). डिजिटल विकास एवं सामाजिक समावेशन रिपोर्ट.
 - 15- यूनेस्को (2021). शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका. पेरिस।
 - 16- भारत की जनगणना (2011). जनगणना रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार।
 - 17- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (2020). उच्च शिक्षा एवं डिजिटल शिक्षण पहल. नई दिल्ली।
 - 18- सिंह, करतार (2016). ग्रामीण विकास: सिद्धांत एवं व्यवहार. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
 - 19- शर्मा, एस. एल. (2018). सामाजिक परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र. जयपुर: पॉइंटर पब्लिशर्स।
 - 20- यादव, एस. सी. एवं वर्मा, आर. के. (2021). "ग्रामीण युवाओं में डिजिटल साक्षरता का अध्ययन", समाजशास्त्रीय समीक्षा, 45(2), 78–92।
-